18

भारत पाकिस्तान युद्ध (1965)

भारत और पाकिस्तान के मध्य एक अन्य युद्ध 1965 में लड़ा गया था। यह जम्मू व कश्मीर के लिए लड़ा जाने वाला दूसरा युद्ध था। आप यह जानते हैं कि पाकिस्तान कश्मीर को अपने राष्ट्र में मिलाना चाहता है। इस युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने जम्मू व कश्मीर के अलावा कच्छ के रण की सीमा रेखा को भी विवाद का विषय बना दिया। जनवरी 1965 के पश्चात् के मध्य यहां दोनों के बीच झड़पें होने लगी। जम्मू कश्मीर में पाकिस्तानी सेना ने कश्मीर पर कब्जा करने के लिए बड़ी संख्या में मुजाहीदीन भेजे। दोनों देशों के बीच झड़पें बढ़ गई और सितंबर 1965 में युद्ध प्रारंभ हो गया। पाकिस्तान इस युद्ध में बुरी तरह पराजित हुआ। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय विशेषकर, अमेरिका व रूस ने इस युद्ध को अधिक भयावह बनने से रोका और 23 सितंबर 1965 को यह युद्ध समाप्त हुआ। इस युद्ध में दोनों देशों की वायु सेनाओं ने भाग लिया। हवाई हमलों द्वारा एक दूसरे पर कई आक्रमण किए गए।

न्यूयार्क टाइम्स के पूर्व पत्रकार आरिफ जमाल ने अपनी पुस्तक शैडो वार (Shadow War) में लिखा है- इस युद्ध में भारत की लगभग पूरी जीत हुई थी। भारत ने सीज़फायर उस समय स्वीकार किया जब उन्होंने 740 स्कवेयर माइल्स की भूमि पर कब्जा कर लिया था। जबकि पाकिस्तान के पास महज 210 स्कवेयर माइल की जमीन पर कब्जा था। भारतीय सेना की जीत के बाद भी, दोनों देश अपने आपको विजेता बताते हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- भारत व पाकिस्तान के मध्य 1965 में हुए युद्ध के कारणों की व्याख्या कर पाएँगे;
- दोनों देशों के मध्य हुए संघर्ष में शामिल क्षेत्रों और अपनायी गई रणनीति का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।

18.1 भारत व पाकिस्तान के मध्य युद्ध (1965)

1965 का यह युद्ध 1947 के कश्मीर विवाद और कच्छ के रण क्षेत्र पर पाकिस्तान द्वारा अधिकार जताने के कारण हुआ। पाकिस्तान ने ही इस युद्ध की शुरूआत की थी।

18.1.1 कच्छ का रण

अन्य रियासतों की तरह कच्छ भी भारत की एक रियासत थी। वर्तमान में यह गुजरात का एक भाग है। पाकिस्तान ने कच्छ के 9000 स्केवयर किलोमीटर क्षेत्र को अपने सिंध प्रांत का हिस्सा होने का दावा किया। 1950 में भारत सरकार ने पाकिस्तानी घुसपैठ को रोकने के लिए वहां सुरक्षा चौकी स्थापित की। पाकिस्तान ने इसका विरोध कर विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने का आग्रह किया। 1960 तक दोनों देशों के मध्य कई बार बातचीत हुई किंतु सफलता नहीं मिली।

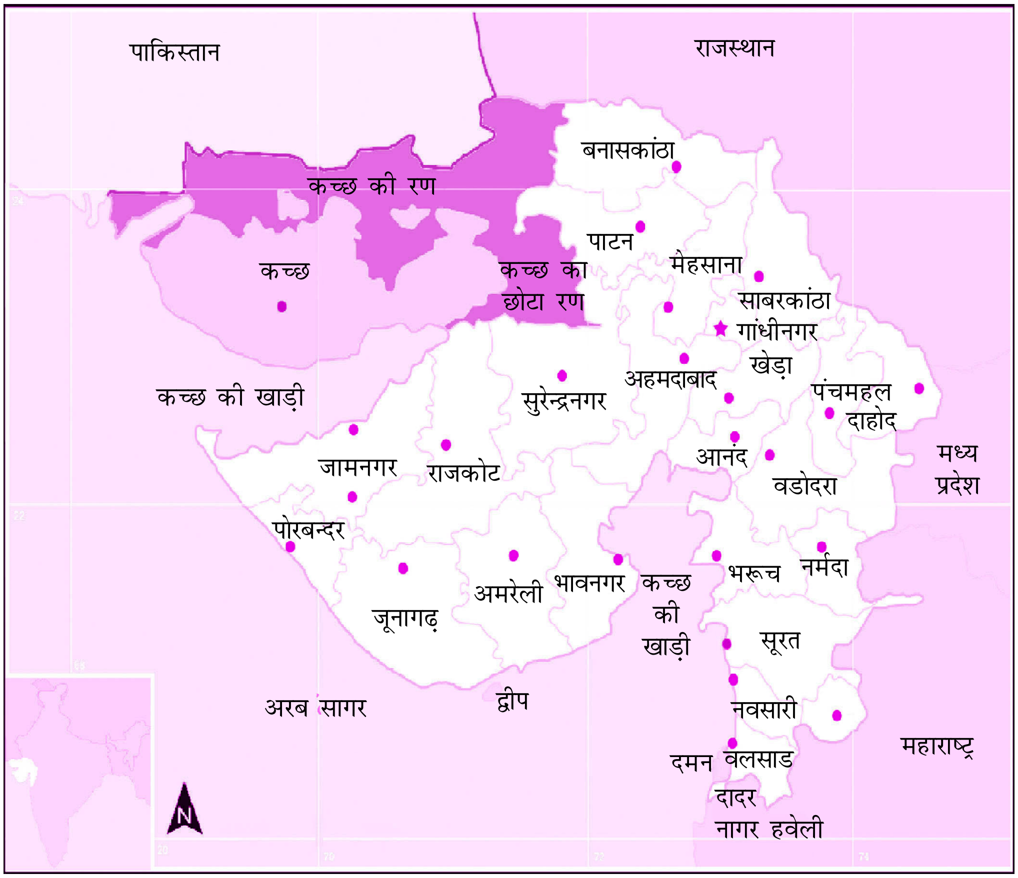

चित्र 18.1 : कच्छ का रण

1965 में कच्छ के रण में क्या हुआ?

1. जनवरी 1965 में पाकिस्तान ने अपनी सेना भेज कर कच्छ के रण में 20 मील लंबा रास्ता बनाने का प्रयास किया। कंजरकोट नामक स्थान पर चौकी भी स्थापित की। पाकिस्तान इस क्षेत्र में लगातार मोर्टार व गोलीबारी करता रहा। भारत की केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अग्रिम चौकी स्थापित कर उसे सरदार पोस्ट का नाम दिया। पाकिस्तानी

टिप्पणी

फौज ने इस चौकी पर बहुत आक्रमण किए किंतु वे सफल न हो सके। उन्हें काफी नुकसान हुआ। भारत ने इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में उठाया। पाकिस्तानी सरकार को भी विरोध दर्ज करवाया गया।

2. 25 अप्रैल 1965 को पाकिस्तान ने भारत के कच्छ के रण में स्थित सरदार पोस्ट पर हमला किया। भारत ने ऐतिहासिक सबूत देकर इस क्षेत्र को अपना बताया। पाकिस्तान अपने पक्ष में कोई सबूत नहीं रख पाया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने दोनों देशों के नेताओं से बात कर युद्ध रोकने का अनुरोध किया। इस समस्या के समाधान हेतु अंतर्राष्ट्रीय समिति का भी गठन किया गया। दोनों देशों ने इस समिति की रिपोर्ट को स्वीकार करने की सहमति दे दी। 30 जून 1965 को सुबह 6 बजे सीजफायर की घोषणा हुई। इस अंतर्राष्ट्रीय समिति ने भारत को 90% क्षेत्र और पाकिस्तान को 10% क्षेत्र का स्वामी घोषित किया।

3. सीजफायर होने के प्रमुख कारण

   (क) भारतीय सेना द्वारा किया गया कड़ा प्रतिरोध

   (ख) ब्रिटिश सरकार की भूमिका

   (ग) बारिश के मौसम ने पूरे क्षेत्र में पानी भर दिया।

18.1.2 1965 में कश्मीर में क्या हुआ?

1. कच्छ के रण में पराजय के बाद पाकिस्तान ने जम्मू व कश्मीर में समस्या पैदा करने का प्रयास किया। 1962 के चीन युद्ध के पश्चात् पाकिस्तान ने चीन से अपने संबंध बढ़ाए। उन्होंने यह सोचा कि भारत चीन से हार गया है तो वह (पाकिस्तान) भी भारत को आसानी से पराजित कर सकता है। अगस्त 1965 में 30,000 पाकिस्तानी घुसपैठियों ने (गोला बारूद के साथ) जम्मू व कश्मीर में प्रवेश किया। उन्हें पाकिस्तान की नियमित गुरिल्ला सेना का समर्थन प्राप्त था। पाकिस्तान को लगा कि कश्मीर के लोग भारत से प्रसन्न नहीं है और वे यहाँ आसानी से विद्रोह करवा सकते हैं।

2. इन गुरिल्ला घुसपैठियों में अधिकतर मुजाहिद्दीन और राजाकार थे। इन्हें नियमित कमांडर के अंतर्गत 10 टुकड़ियों में विभाजित किया गया था। पाकिस्तानी फौज ने इस ऑपरेशन का नाम जिब्राल्टर (Gibralter) रखा था। 5 अगस्त 1965 को इस जिब्राल्टर सेना की दो टुकड़ियाँ सीजफायर तोड़कर भारत में घुसपैठ करने में कामयाब रही। 9 अगस्त 1965 को करीब 100 घुसपैठियों ने पूंछ में कई दिनों तक हमले किए। किंतु वे सफल नहीं हो पाए। उन्हें भारतीय सेना ने हरा दिया। इस घुसपैठ की पुष्टि संयुक्त राष्ट्र सैन्य निरीक्षक (United Nations Military Observer) ने की थी। भारत ने अब दुश्मन को मुँह तोड़ जवाब देने का फैसला किया। 15 अगस्त 1965 को भारतीय सेना ने सीजफायर रेखा से आगे बढ़कर कारगिल और हाजी पीर दर्रा पर कब्जा कर लिया। इसके पश्चात् घुसपैठ पूर्ण रूप से रोक लग गई।

पाठगत प्रश्न 18.1

1. पाकिस्तानी फौज ने भारत के कच्छ के रण में स्थित कौन-सी चौकी को निशाना बनाया?
2. 1965 में पाकिस्तान ने कितने मुजाहिद्दीन कश्मीर में भेजे थे?
3. भारतीय सेना ने नियंत्रण रेखा (सीजफायर) को कब पार किया था?

18.1.3 वास्तविक युद्ध

मानचित्र 18.2 देखिए। यह आपको भारत व पाकिस्तान की 1947 की सीमा रेखा को बिंदुओं (Black Dotted Lines) में प्रदर्शित करता है। इसे ही नियंत्रण रेखा (Line of Control) कहा जाता है। यह रेखा वर्तमान समय में भी है। पाकिस्तान ने इस युद्ध की शुरूआत अपनी सेना को स्थानीय कपड़े पहनाकर नागरिकों के रूप में भेजकर की। उनकी वेशभूषा और गणवेश सामान्य नागरिकों जैसा था। उनके पास राइफलें और मशीन गन भी उपलब्ध थी। इन लोगों की पाकिस्तान से होने वाली गोलाबारी आक्रमण करने में सहायता करती थी।

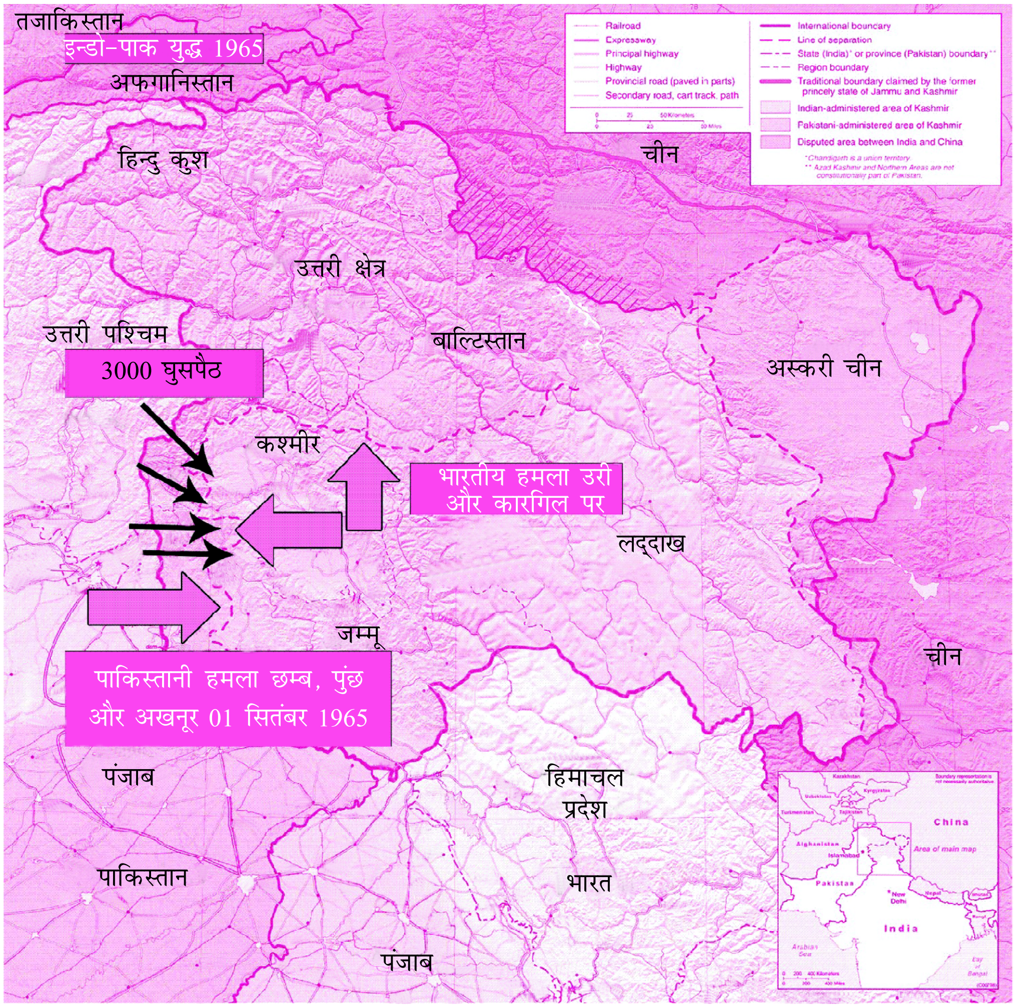

मानचित्र 18.2 : भारत पाक युद्ध 1965

टिप्पणी

18.1.4 भारतीय प्रतिरोध

(क) 1 सितंबर 1965 को सुबह पाकिस्तान ने ऑपरेशन ग्रैंडस्लैम शुरू किया। इसके तहत वह सीजफायर रेखा को निशाना बनाकर गोलीबारी कर रहा था। इस गोलीबारी का निशाना जम्मू कश्मीर का छम्ब सेक्टर था। उसका उद्देश्य अखनूर और जम्मू के क्षेत्रों पर कब्जा करना था। पहले हमले छम्ब में इसलिए किए गए क्योंकि वह एक मैदानी इलाका है जिसके पश्चिमी छोर पर पहाड़ी और पूर्वी छोर पर चिनाब नदी है। पाकिस्तान ने अपनी तोपें और गोला बारूद से इस क्षेत्र में हमले किए किंतु चिनाब नदी पर कमजोर पुल के कारण वह सफल नहीं हो पाया। फिर भी इस प्रारंभिक हमले में पाकिस्तान भारत में लगभग 5 मील आगे आने में सफल हुआ।

(ख) 2 सितम्बर को पाकिस्तानी हवाई जहाजों ने छम्ब-जोड़ियाँ रोड पर हमला कर दिया। भारतीय ब्रिगेड बिना किसी तोपखाने के इस हमले का जवाब दिया। पाकिस्तानी टैंक भारत में आसानी से घुसपैठ कर गए। इसका कारण भारत की सेना के पास किसी बड़े टैंक की उपस्थिति का न होना था। अखनूर पर कब्जा करने के लिए पाकिस्तान ने भारत पर जोरदार हमला किया। अगला हमला सियालकोट की ओर से जम्मू पर कब्जे के लिए किया गया था। उनका उद्देश्य था कि इन हमलों से वो भारतीय सेना को लद्दाख सहित जम्मू व कश्मीर में ही रोक देंगे।

(ग) इसी समय भारतीय वायु सेना को बुला लिया गया। यह निर्णय तत्कालीन रक्षा मंत्री वाई. बी. चाव्हण ने लिया था। इस योजना का उद्देश्य भारतीय सेना को छम्ब सेक्टर में सुरक्षा प्रदान करना था। भारतीय वायुसेना के वैम्पायर और मिस्टेयर जहाजों ने शत्रुओं के टैंक, वाहनों और सेना पर जबरदस्त गोलीबारी की। 13 टैंक, 2 तोपें, और 62 मोटर वाहन ध्वस्त हुए। इसने पाकिस्तानी आक्रमण को रोका। पाकिस्तान ने भी भारतीय वायु सेना का मुकाबला करने हेतु अपनी वायु सेना को युद्ध में भेजा। पाकिस्तानी वायुसेना ने अमेरिका निर्मित सेबर जेट्स एफ 96 और एफ 104 स्टार फाइट्र्स का प्रयोग किया। इन्हें भारतीय वैम्पायर और मिस्टेयर से बहुत उच्च कोटि का माना जाता था। यह भी माना जाता है कि नयी तकनीक के लड़ाकू विमान गनेट (GNAT) का प्रयोग सैबर के विरुद्ध करना अनुकूल नहीं था किंतु भारतीय पायलटों के युद्ध कौशल के कारण सैबर हवाई जहाज मार गिरा दिए गए। यह हवाई युद्ध 1 से 6 सितंबर 1965 के मध्य छम्ब-जोड़ियाँ सेक्टर में हुआ था।

18.2 1965 में भारत ने किन अन्य क्षेत्रों में युद्ध लड़े?

भारतीय सेना ने अमृतसर और फरीदकोट के निकट पंजाब पर 6 सितंबर 1965 में जोरदार हमला किया। वायुसेना ने इस हमले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और शत्रु पक्ष के अनेक टैंक और हवाई जहाज को ध्वस्त किया।

18.2.1 लाहौर सेक्टर

8 सितम्बर 1965 को भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान के पश्चिमी बॉर्डर क्षेत्र में पठानकोट से लाहौर तक हमला कर दिया। इसका मुख्य उद्देश्य लाहौर पर कब्जा करना तथा पाकिस्तानी फौज के हथियार और गोला बारूद को नुकसान पहुँचाना था। भारतीय सेना को युद्ध के हर क्षेत्र में सफलता मिली। सिपाही व अफसरों, दोनों ने अपनी बहादुरी और शौर्य का परिचय दिया। केवल सियालकोट क्षेत्र में ही 240 पाकिस्तानी टैंक नष्ट कर दिए गए थे। कुल 460 कि.मी. वर्ग का क्षेत्र भारत के अधीन आ गया था। भारतीय सेना शहर के बाहर तक पहुँच गई थी।

18.2.2 राजस्थान सेक्टर

भारत ने पाकिस्तानी फौज का सामना करने हेतु राजस्थान सेक्टर में तीसरा मोर्चा खोल दिया। इस क्षेत्र से भारत पाकिस्तानी सेना को सिंध प्रांत में बांधे रखना चाहता था। पैदल सेना 11 इन्फैन्टरी ने बाड़मेर-हैदराबाद (पाकिस्तान) क्षेत्र पर हमले किए। भारत ने 8 सितम्बर को गदरा पर कब्जा कर पाकिस्तानी रेंजर्स को रेगिस्तानी क्षेत्र से बाहर खदेड़ दिया।

पाठगत प्रश्न 18.2

1. 1965 के युद्ध की शुरूआत पाकिस्तान द्वारा कश्मीर के किस हिस्से पर हमला करने से हुई थी?
2. 1965 युद्ध में भारतीय रक्षा व्यवस्था किस प्रकार की थी?
3. लाहौर सेक्टर में भारत ने अपने ऑपरेशन कब शुरू किए थे?

18.2.3 वायु सेना की भूमिका

भारतीय वायु सेना ने अनेक स्थलों पर हमले करके थल सेना को सहयोग दिया। युद्ध के पहले दिन भारतीय जहाज वैम्पायर और मिस्ट्रीयर ने पाकिस्तानी सेना पर जोरदार हमले किए। इससे भारतीय सेना छम्ब-जोड़ियाँ क्षेत्र तक पहुँच गई। इसी बीच भारतीय कैनबरा जहाजों ने पाकिस्तानी वायु सेना के मुख्य केंद्र सरगोधा और चकलाला पर रात में हमला कर ध्वस्त कर दिया। अन्य पाकिस्तानी सैन्य केंद्र अकवल, पेशावर, कोहाट, चक जुम्हरा और रिसाईवाला पाकिस्तानी जहाजों F-86 के विरुद्ध पर भी हमले किए गए। मिस्ट्रीयरर्स का प्रयोग जमीनी आक्रमण के लिए किया गया वहीं हंटरों का उपयोग बम गिराने और थल सेना को अन्य सहायता के लिए किया गया। ये जहाज हवाई पेट्रोलिंग (निरीक्षण) का भी कार्य कर रहे थे। जीनैट (GNAT) स्कवार्डन भारतीय हवाई जहाजों की सफलतापूर्वक रक्षा कर पाए। GNAT की इस सफलता के कारण उन्हें 'सैबर मारक' (Sabre Slayer) का नाम दिया गया। पाकिस्तान के पास सैबर जेट थे जिनका प्रयोग उसने युद्ध के दौरान किया था। इस युद्ध में भारत ने 35 और पाकिस्तान ने 73 हवाई जहाज खो दिए।

18.2.4 युद्ध विराम (सीज़फायर)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने युद्ध की स्थिति को गंभीरता से लिया। 2 सितंबर 1965 को संयुक्त राष्ट्र महासचिव यू थांट ने दोनों देशों से शांति की अपील की। उन्होंने दोनों देशों से युद्ध रोकने का अनुरोध किया तथा देशों से संयुक्त राष्ट्र सैन्य निरीक्षण दल (United Nations Military Observer Team) के साथ समन्वय करने का भी निवेदन किया। इन्हीं कोशिशों के बीच संयुक्त महासचिव ने भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तानी राष्ट्रपति अयूब खान से मुलाकात की। इसी के परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने 20 सितंबर 1965 को सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर सीज़फायर का अनुरोध किया। 27 सितंबर 1965 को दोनों देशों ने सीज़फायर की घोषणा कर दी।

सीज़फायर के समय भारत के पास लगभग 700 वर्ग मील का क्षेत्र था। वहीं पाकिस्तान के पास 196 स्कवॉयर मील क्षेत्र पर कब्जा था। 22 दिनों के युद्ध में पाकिस्तान ने 417 टैंक खो दिये। भारत को 123 टैंकों का नुकसान हुआ। पाकिस्तान के 73 लड़ाकू विमान और भारत के 35 लड़ाकू विमान नष्ट हो गए। यह संख्या प्रमाणिक नहीं है क्योंकि दोनों देश एक दूसरे के विरुद्ध अलग-अलग आँकड़ें प्रस्तुत करते हैं। किंतु यह कहा जा सकता है कि पाकिस्तान को भारत से बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। यह नुकसान पाकिस्तान के पास बेहतर टैंक, लड़ाकू विमान और अमेरिकी हथियार होने के बावजूद हुआ है। युद्ध में हथियार नहीं हथियार चलाने वालों का कौशल महत्व रखता है।

क्रियाकलाप 18.1

1965 के युद्ध में परमवीर चक्र प्राप्त करने वालों के नाम इंटरनेट पर खोजकर लिखें। इनके चित्रों का संग्रह कर एक कोलाज बनाइए।

पाठगत प्रश्न 18.3

1. 1965 के युद्ध में भारतीय वायु सेना ने कौन-से प्रमुख विमानों का प्रयोग किया?
2. 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान भारत के प्रधानमंत्री कौन थे?

आपने क्या सीखा

- 1965 के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि
- कच्छ के रण में हुई कार्रवाइयाँ
- कश्मीर घाटी में हुए सैनिक ऑपरेशन
- लाहौर व राजस्थान क्षेत्रों में युद्ध का वर्णन

- युद्ध में भारतीय वायुसेना की भूमिका
- सीज़फायर की घोषणा किस प्रकार हुई।

पाठांत प्रश्न

1. कच्छ के रण के मुख्य ऑपरेशनों के बारे में संक्षेप में लिखिए।
2. 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में कश्मीर क्षेत्र में हुए संघर्ष का वर्णन कीजिए।
3. 1965 के युद्ध में भारतीय वायु सेना ने किस महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
4. 1965 के युद्ध में हुए सीज़फायर के कारण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1

1. सरदार पोस्ट
2. लगभग 30000 पाकिस्तानी फौज सामान्य स्थानीय वेशभूषा में तथा राजाकार और मुजाहिद्दीन
3. 15 अगस्त 1965

18.2

1. छम्ब सेक्टर
2. श्री वाई. बी. चाव्हण
3. 8 सितंबर 1965

18.3

1. मिस्टरे, कैनबेरा और हंटर वायुयान
2. श्री लाल बहादुर शास्त्री